25

23rd International Interdisciplinary Conference

२३ वी आंतरराष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद, पुणे

'The Contribution and Achievements of Men in Various Spheres at National and International Levels'

'देश आणि विदेशातील विविध क्षेत्रातील पुरुष कर्तृत्वाचे योगदान'

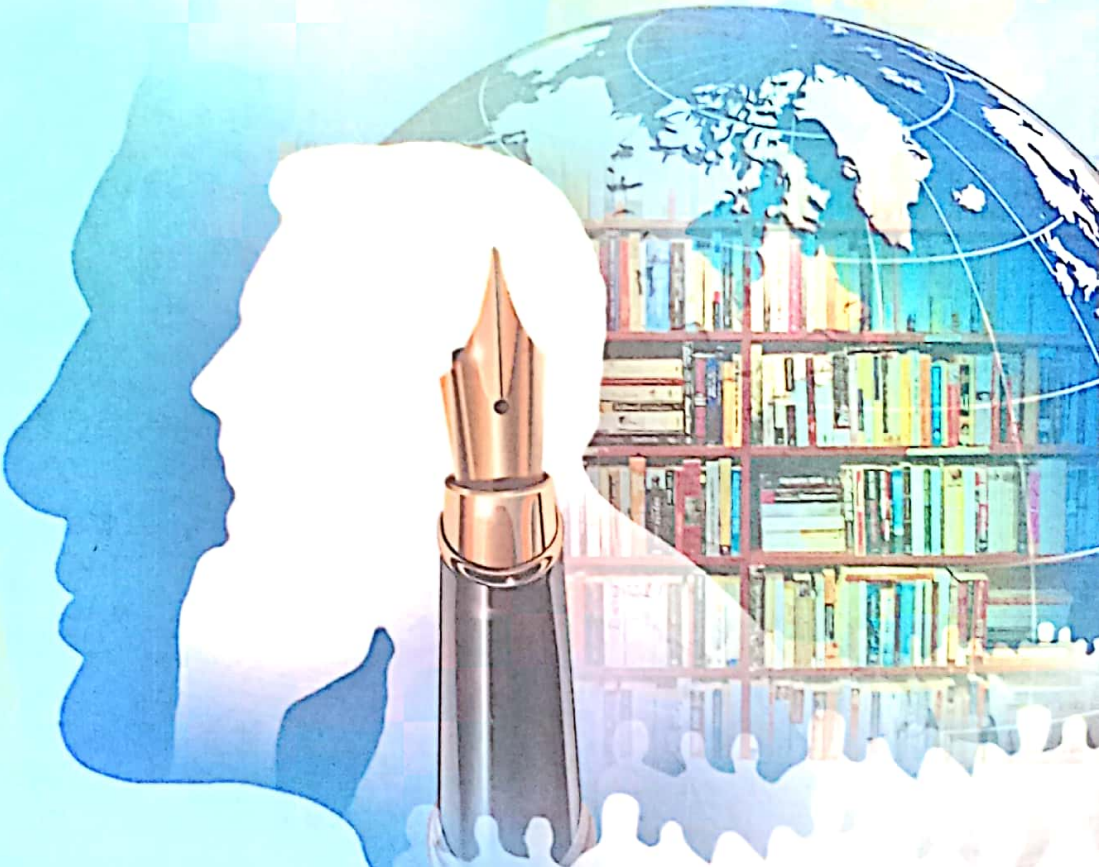

Editors

Lyudmila Sekacheva | Dr. Vitthal Shivankar | Dr. Snehal Tawre

Dr. D. R. Bhosale | Dr. Shivling Menkudale | Dr. Sanjay Nagarkar

Scanned with OKEN Scanner

25

तेविसावी

आंतरराष्ट्रीय आंतरविद्याशाखीय परिषद, पुणे

देश आणि विदेशातील विविध क्षेत्रातील पुरुष कर्तृत्वाचे योगदान

The Contribution and Achievements of Men in Various Spheres at National and International Levels

संपादक

- लुदमिला सेकाचेव्हा
- डॉ. विठ्ठल शिवणकर
- डॉ. स्नेहल तावरे
- डॉ. डी. आर. भोसले
- डॉ. शिवलिंग मेनकुदळे
- डॉ. संजय नगरकर

स्नेहवर्धन प्रकाशन

पुणे

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

- पुरुष कर्तृत्वाच्या निमित्ताने... – संपादक / ७

१. समाजसुधारक संत कबीर — प्राचार्य डॉ. डी. आर. भोसले / ९

२. स्वामी विवेकानंदजी के सामाजिक विचार — प्रा. मारूफ मुजावर / १४

३. आद्य क्रांतिवीर उमाजी नाईक — प्रा. डॉ. संध्या माने / १८

४. भारताच्या स्वातंत्र्यलढ्यातील बॅरिस्टर पी.जी.पाटील सरांची कामगिरी — प्रा. डॉ. जे. एस. इंगळे / २२

५. मानवी जीवनाचे सौंदर्यवादी तत्त्वज्ञान सांगणारा अष्टपैलू साहित्यिक – पु. ल. देशपांडे — प्रा. डॉ. सुनील चंदनशिवे / २७

६. धनराज पिल्ले यांचे हॉकीमधील योगदान — प्रा.डॉ. इब्राहिम मुल्ला / ३१

७. वर्तनवादी मानसशास्त्रज्ञ – बुरहस फ्रेडरिक स्किनर — डॉ. ए. सी. शिंदे / ३४

८. आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार – यशवंतराव चव्हाण — डॉ. एस. आय. बराले / ३७

९. छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज यांचे शैक्षणिक कार्य — डॉ. संदीप माने / ४२

१०. पर्यावरण चळवळीचे भारतीय आयाम व महात्मा गांधीजींच्या पर्यावरण विषयक विचारांची उपयुक्तता — डॉ. विजय पाडळकर / ४६

११. बिरसा मुंडा : स्वातंत्र्य सेनानी — डॉ. संदीप सूर्यवंशी / ५०

१२. भारतीय समाजशास्त्रज्ञ डॉ.एम.एन.श्रीनिवास यांचे जीवन व कार्य — प्रा. अमृत मुधाळे / ५४

१३. विजय गोविंदराजन यांचे व्यवस्थापनातील योगदान- तीन खोकी उपाय व्यूहरचना : एक आध्यात्मिक समन्वय — प्रा. जयश्री बनसोडे / ५८

Scanned with OKEN Scanner

स्वामी विवेकानंदजी के सामाजिक विचार

– प्रा. मारूफ समशेर मुजावर

विवेकानंद के सामाजिक विचार –

स्वामी विवेकानंद सुधारों के उत्पन्न हुए थे । उनकी सामाजिक विचारधारा भी वेदांत पर आधारित थी । उन्होंने समय और युग देश की आवश्यकताओं को समझ कर वेदांत की अपनी व्याख्या प्रस्तुत की । वास्तव में वह एक यथार्थवादी विचारक थे । उन्होंने समाज में प्रचलित तत्कालीन कुरीतियों का भी विरोध किया । वे मानवतावादी संत थे और उन्हें विश्व में मानवता और विश्व में बंधुत्व का संदेश प्रसारित करना था । मानवता के वास्तविक रूप का ज्ञान उन्हें हो चुका था, इसीलिए वे मानवता को बंधनों से मुक्त कराने के लिए जीवन भर प्रयत्नशील रहे । उनके सामाजिक विचारों की विवेचना निम्नलिखित है –

जाति व्यवस्था –

जाति प्रथा भारत की एक महत्त्वपूर्ण एवं जटिल समस्या है । विभिन्न समयों पर विभिन्न सुधारकों ने इसे सुधारने तथा हल करने के अलग-अलग नाना प्रकार उपाय प्रस्तावित एवं प्रसारित किए परंतु कालांतर में उनके उपाय अस्थायी ही सिद्ध हुए । कबीर, शंकर, रामानुज तथा चैतन्य आदि समाज-सुधारकों ने जाति प्रथा की कटु आलोचना तो अवश्य की, किंतु उसे समूल समाप्त करने के लिए कोई दृढ़ उपाय नहीं बताया । फलत: उनके विचारों का शिक्षित समाज पर केवल अस्थायी प्रभाव ही पड़ा और उनकी मृत्यु के पश्चात् यह समस्या पुन: उठ खड़ी हुई ।

स्वामी विवेकानंद भी एक समाज सुधारक थे, अत: उन्होंने भी अपना ध्यान जाति प्रथा पर केंद्रित किया । उन्होंने यह अनुभव किया कि जाति प्रथा के भेदों का पूर्णत: उन्मूलन अथवा विनाश करना असंभव है । परंतु इसके कठोर बंधनों को ढीला किया जा सके, तो समाज का पारी हित हो सकता है । उन्होंने कहा कि धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन में जाति प्रथा कोई भेद उत्पन्न नहीं करती । सन्यासियों में कोई जातिगत भेद-भाव नहीं होता । एक ब्राह्मण और एक शूद्र सन्यासी को समान अधिकार प्राप्त होते हैं । समाज पहले व्यावसायिक वर्गों में विभक्त था । कालांतर में इस प्रथा में जटिलता इतनी अधिक बढ़ गई कि

समाज में यह एक गंभीर समस्या बन गई । स्वामी विवेकानंद प्राचीन भारत की वर्णव्यवस्था से अत्याधिक प्रभावित थे । उनका मत था कि उसी चतुर्वर्ण व्यवस्था को पुन: स्थापित किया जाना चाहिए । इसके साथ ही ऐसे प्रयास करने चाहिए जिनसे ऊँचनीच का भेद-भाव मिटकर समाज में समानता स्थापित हो सके । इसके लिए वे शिक्षा प्रसार को अत्यंत आवश्यक समझते थे उनका कहना था कि ''जाति भेद का अंत करने का एकमात्र उपाय संस्कृति तथा शिक्षा का प्रसार है जो कि उच्चतर जातियों का बल है । यदि ऐसा हो जाये तो आपका उद्देश्य पूरा हो सकता है ।'' स्वामी विवेकानंद ब्राह्मणों के प्रभुत्व के विरोधी थे । उनकी धारणा थी कि यह प्रभुत्व शूद्रों को आध्यात्मिक ज्ञान से वंचित रखता है । उनका कथन था कि ''निम्न वर्ग के लोगों को शिक्षित एवं सुसंस्कृत करके तुम जन साधारण पर बड़ी अनुकंपा करोगे, उनकी दास्ताँ की जंजीरों को खोल देंगे तथा संपूर्ण राष्ट्र का उत्थान करोगे ।'' स्वामी जी ने छुआ-छूत का भी विरोध किया ।

मूर्तिपूजासंबंधी विचार –

स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे । स्वामी रामकृष्ण परमहंस 'काली माता' के अनन्य भक्त थे । अत: स्वामी विवेकानंद ने अन्य भारतीय समाज-सुधारकों की तरह मूर्तिपूजा का खंडन अथवा विरोध नहीं किया । वह तो अंधविश्वास तथा पाखंड के विरोधी थे और श्रद्धा एवं भक्ति को ईश्वर की प्राप्ति का साधन समझते थे । उनका मत था, ''आजकल यह आम बात हो गई है कि सभी लोग अनायास ही इस बात को स्वीकार करते हैं कि मूर्तिपूजा ठीक नहीं है । मैं भी ऐसा कहता था और सोचता था । उसके दंड स्वरूप मुझे एक ऐसे महापुरुष के पैरोंतले बैठकर शिक्षा ग्रहण करनी पड़ी, जिन्होंने पूर्ति पूजा से ही सब कुछ पाया था । मैं स्वामी रामकृष्ण परमहंस की बात कर रहा हूँ । अज्ञर मूर्ति-पूजा द्वारा इस तरह रामकृष्ण परमहंस जैसे व्यक्ति बन सकते हैं, तो हजारों मूर्तियों की पूजा करो ।''

सामाजिक परिवर्तन में संयम पर विश्वास –

स्वामी विवेकानंद की धारणा थी कि सामाजिक परंपराएँ एवं रुढ़ियाँ समाज की आत्मरक्षा के सिद्धांत पर आधारित होती है, किंतु सामाजिक नियमों को यदि स्थिर रखा जाता है और उनमें परिवर्तन नहीं किया जाता तो समाज में बुराइयाँ उत्पन्न हो सकती हैं । इसलिए स्वामी विवेकानंद उन सामाजिक नियमों को विद्ध्वंसात्मक कार्यवाही द्वारा समाप्त करना चाहते थे, जिन्होंने उस परंपरा की संस्था को आवश्यक बना दिया है । वे सामाजिक रुढ़ियों को धीरे-धीरे दर्शन के माध्यम से समाप्त करना चाहते थे । उनकी प्रवृत्ति रचनात्मक थी । सुधारोंद्वार

Scanned with OKEN Scanner

परंपराओं में परिवर्तन करना वह असंभव समझते थे । स्वामी विवेकानंद का कथन था कि परंपराओं एवं रीतियों की निंदा करने से एक आवश्य तनाव उत्पन्न होगा जिससे कोई लाभ नहीं होगा, हिंदुवाद की शक्ति का प्रतीक उसकी आत्मसात करने की क्षमता है ।

सामाजिक जीवन का मूल आधार धर्म –

स्वामी विवेकानंद भारत को धर्ममय बनाना चाहते थे । वह इंग्लैंड के लिए तो राजनीति को सामाजिक जीवन का आधार मानने को तैयार थे, परंतु वे भारतीय समाज को राजनीति से पृथक रखना चाहते थे । उनका कथन था, "भारत में सामाजिक सुधार करने के बजाय धार्मिक सुधार करने चाहिए ।" वे आध्यात्मवाद को भारतीय सामाजिक जीवन की आधारशीला बनाना चाहते थे ।

स्वामी विवेकानंद एक कट्टर देशभक्त थे । उनका राष्ट्रवाद अति व्यापक था । वे देश के हित के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर देने के लिए तत्पर थे । अपने विचारों को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से ही उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी । स्वामी विवेकानंद एक महान आध्यात्मिक समाज सुधारक थे । विवेकानंद के विचारों में भारत के सामाजिक जीवन को उन्नत करने की प्रबल आकांक्षा है । वे भारत के पुनर्जागरण के लिए सामाजिक सुधारों को भी बहुत जरुरी मानते हैं ।

विवेकानंद ने भारत में प्रचलित जात-पाँत, छूआछूत तथा संप्रदायवाद जैसी सामाजिक बुराइयों की कटु आलोचना की एवं इन्हें सुधारने का प्रयास किया । उनका मत था कि भारत के पतन का मुख्य कारण उसकी सामाजिक दुर्बलताएँ हैं । इन दुर्बलताओं में प्रमुख हैं- छूआछूत, पाश्चात्य भौतिक संस्कृति के प्रति आकर्षण, जाति-पाँति के भेद, रुढ़िवादिता तथा बाल-विवाह जैसी कुप्रथाएँ ।

अस्पृश्यता की निंदा –

विवेकानंद ने अस्पृश्यता को भारत की सामाजिक दुर्बलता का मूल कारण बताया । इस रोग ने भारत को उच्च और हीन दलित जनता के बीच में बाँट दिया है जिससे सामाजिक समरसता समाप्त हो गई है । वे कहते हैं, "क्या हम (भारतवासी) मनुष्य हैं ! हम भारत के करोड़ गरिबों के दुःख एवं उनकी पीड़ा के लिए क्या कर रहे हैं ? हम उन्हें अछूत मानते हैं । .....वे हजारों ब्राह्मण भारत के नीच एवं दलित लोगों के लिए क्या कर रहे हैं ? इनके मूँह से केवल यही एक वाक्य निकलता है, 'हमें मत छुओ, हमें मत छुओ ।' इनके हाथों हमारा सनातन धर्म तिना छोटा एवं भ्रष्ट हो चुका है । अब हमारा धर्म किस में रह गया है ? मात्र छूआ- छूत में ।"

विवेकानंद की समाज-सुधार की योजना में दलितों एवं हरिजनों के उत्थान

की कामना है । उन्होंने वर्णव्यवस्था के नाम पर इन पर होनेवाले अत्याचारों एवं भेदभावों की कठोर शब्दों में निंदा की । उनके शब्द हैं, "इसमें से प्रत्येक को दिनरात भारत के उन दलितों के लिए प्रार्थना करना चाहिए जो दरिद्रता एवं पुरोहितों के जंजाल तथा अत्याचारों मे जकड़े हुए हैं । .....भारत में कौन ऐसा है जिसके हृदय में इन बीस करोड़ स्त्री-पुरुषों, जो गहरी दरिद्रता और अज्ञान में डूबे हुए हैं, के लिए सहानुभूमि है? उनके जीवन में कौन प्रकाश ला सकता है? इन्हीं लोगों को अपना देवता मानो । मैं केवल उसी को महात्मा मानता हूँ जिसका हृदय दलितों के लिए द्रवित होता है । जब तक ये करोड़ों लोग भूख और अज्ञान के शिकार हैं तब तक मैं उन लोगों में से प्रत्येक को विश्वासघाती समझता हूँ जो उन (दरिद्रों) के द्वारा पैदा किए धन से शिक्षा प्राप्त करते हैं किंतु उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते ।"

विवेकानंद पूर्व की आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक महानता के समर्थक थे तो पश्चिमी वैज्ञानिक और संगठनात्मक कुशलता व समाजसेवा भावना के भी प्रशंसक थे तथा उन्होंने इन दोनों ही बातों का मिश्रण प्रस्तुत किया जिसने आधुनिक भारत के समाज-सुधारक और राजनीतिक नेताओं को प्रभावित किया । विवेकानंद दरअसल समाज को राजनीति से ऊपर मानते हैं । उनका यह भी मानना है कि वैयक्तिक स्वतंत्रता व्यक्ति और राज्य के संबंधों पर निर्भर करती है । हालाँकि घोर व्यक्तिवाद और योग्यतम की उत्तरजीविता की अवधारणा को वह खारिज करते हैं । वह प्रतियोगिता के बजाय सहयोग, सौहार्द और सामाजिक कर्तव्य पालन पर ज्यादा जोर देते हैं ।

संदर्भ सूची –

१) मुजुमदार सत्येंद्रनाथ, स्वामी विवेकानंद यांचे चरित्र, रामकृष्ण मठ नागपूर प्रकाशन, आवृत्ती अकरावी, सन २०००

२) ग्रोवर डॉ. बी. एल. (२००३), आधुनिक भारताचा इतिहास (मराठी/इंग्लिश) भाषेत), नवी दिल्ली, एस चंद, पृ. ३२९

३) https://www.oneindia.com/

☙☙

Scanned with OKEN Scanner